PART C — (4 × 10 = 40 marks)

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2 × 10 = 20)

प्रत्येक उत्तर 500 शब्दों में हों।

16. कवि और कलपना कविता का मूल्यांकन कीजिए।

17. 'वरदान मागूँगा नहीं' कविता का सारांश लिखिए।

18. 'भारत की आरती' कविता का मूल्यांकन कीजिए।

किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए। (1 × 10 = 10)

प्रत्येक उत्तर 500 शब्दों में हों।

19. छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

20. प्रमेचन्द युगीन कहानी साहित्य की विशेषताओं को लिखिए।

21. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (2 × 5 = 10)

(a) दिनकर

(b) अज्ञेय

(c) जैनेंद्र कुमार

(d) मोहन राकेश

Time : Three hours Maximum : 75 marks

PART A — (5 × 3 = 15 marks)

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक उत्तर 50 शब्दों में हों।

1. 'आशा' सर्ग का उद्देश्य क्या है?

2. कवि मुक्तिबोध अपनी असफलता का कारण क्या मानते हैं?

3. कवि ने कल्पना को विलासिनी बनने को क्यों कहा?

4. शमशेर बहादुरसिंह की दृष्टि में भारत की भूमि कैसी है?

5. 'छायावाद' से तात्पर्य क्या है?

6. प्रगतिवादी कविता पर मार्क्सवाद के प्रभाव को बताइए।

7. हिन्दी प्रथम कहानी के संबंध में विद्वानों के विचार क्या थे?

8. जयशंकर प्रसाद के एकांकियों की क्या विशेषता है?

PART B — (4 × 5 = 20 marks)

किन्हीं चार की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

9. नेत्र निमीलन करती मानो
प्रकृति प्रबुद्ध लगी होने
जगी वनस्पतियाँ अलसाई
मुख होती शीतल जल से।

10. मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ
तुम्हारी प्रेरणा से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न है,
कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है,
मेरी असंग स्थिति में चलता फिरता साथ है।

11. कल्पना उपासिनी
न मलीन छोर से
उदास नेत्र कोर से
अश्रु बूँद पोंछकर कहा कि मँ गुलाम हूँ
स्वतंत्र रश्मि पर दली
स्वतंत्र वायु में चली
मगर सदा यही दरद रहा कि मैं गुलाम हूँ।

12. स्मृति सुखज प्रहारों के लिए
अपने खण्डरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की संपत्ति चाहूँगा नहीं

13. सम्राज्य पूँजी का क्षत होवे
ऊँच नीच का विधान नत होवे
साछिकार जनता उन्नत होवे
जो समाजवाद जय पुकारती।

14. संसार भर में शांति का मंत्र फूँकता रहा
पर जिसे अपने ही बीच घर में
भाई-भाई के बीच दीवार खड़ी करनी पड़ी
जो पराधीन देश की मुक्ति में लगा रहता था
पर जिसके अपने ही अंग पराये बंधन में जकड़े रहे।

15. और तभी किसी दिन
किसी प्राचीन काव्य संग्रह से
तुम मेरी कविताएँ पढ़ोगे;
और उन्हें पढ़कर तुम्हें कैसा लगेगा।